हरियाणा लोक संगीत का राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में योगदान

श्री हेमन्त
सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग
एस.ए.जैन कॉलेज, अम्बाला शहर

आदि काल से ही मानव की प्रवृत्ति रही है कि वह अपने भावों को प्रस्तुत करे, माध्यम चाहे जो भी हो। जब भाषा का विकास नहीं हुआ था तब आंगिक क्रियाओं से भावाभिव्यक्ति होती थी। भावों की अभिव्यक्ति कला है। विभिन्न कलाओं में भावनात्मक अभिव्यक्ति अलग–अलग तरह से होती है।

लेखक जिसे लिखकर, चित्रकार रंगों के माध्यम से चित्र बनाकर, शिल्पकार मूर्ति के माध्यम से और संगीतकार उन्हें गीत या धुन के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। लोक संगीत भी इसी प्रकार की अभिव्यक्ति है जिसमें ग्रामीण लोग बहुत साधारण व सरल तरीके से अपने सुख–दुःख, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। सारांश रूप में लोक गीत सम्पूर्ण जीवन की छोटी–सी कहानी है जो 'गागर में सागर' भरने जैसा कार्य है।

''लोक संगीत किसी एक व्यक्ति की अभिव्यक्ति नहीं अपितु पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही परम्परा का मौखिक रूप है जो सम्भवतः कुछ परिवर्तित रूप में हर अगली पीढ़ी तक पहुँचा है।'' ''हरियाणा एक कृषि प्रधान प्रदेश है। एक कर्म भूमि है। कठिन परिश्रम यहाँ के किसान का स्वभाव है।

कृषि प्रधान होते हुए भी हरियाणा एक सांस्कृतिक इकाई है। सांस्कृतिक क्रियाओं को मूर्त रूप देने का माध्यम है यहाँ का लोक संगीत। दिन भर कड़ा परिश्रम करने वाला यहाँ का किसान भी लोक संगीत प्रेमी है। इसके प्रमाण हमें गाँवों में होने वाले भजन, कथावाचन व विभिन्न अवसरों पर होने वाले लोक–नृत्यों से प्राप्त होते हैं।''[1]

''लोक संगीत हरियाणा के जीवन का अभिन्न अंग है। जो यहाँ के लोक जीवन को प्रभावित किये हुए है। इस संगीत में उस सांगीतिक एवं साहित्यिक पक्ष के दर्शन हैं जिसमें खान–पान, ज्ञान, कला–कौशल, धर्म, दर्शन, सामाजिक,

मानसिक चेतना तथा सौन्दर्य बोध आदि ध्वनित होते हैं। मूलतः सम्पूर्ण प्रदेश के लोक संगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मन की अनुभूति जब गुनगुनाती हुई उभर आती है तो संगीत बन जाती है। जिसका माध्यम है भाषा, स्वर और लय। इन तीनों की स्वाभाविकता इसकी विशेषता होती है और इसी प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती है हरियाणवी लोक संगीत में।''[2]

निःसन्देह लोक संगीत जन मनोरंजन का सुलभ साधन है। लोक संगीत लोक द्वारा, लोक के लिए, लोक की साधारण से अति विशिष्ट भावनाओं, रीति–रिवाजों व संस्कारों को सुदृढ़ बनाने का संगीत है।

हरियाणा के लोग बहुत सरल हैं। बाहरी आडम्बरों व कर्मकाण्डों में इनका विश्वास नहीं है। साधारण तरीके से अपनी दिनचर्या में भक्ति, नीति, कर्म, संस्कार व संगीत को सम्मिलित कर लेते हैं। संगीत न केवल हरियाणा वासियों के जीवन का अभिन्न अंग है अपितु गहराई से उनके जीवन के कण–कण में बसा हुआ है।

लोक संगीत की शाखा 'लोक गीत' है। ''लोक गीत समूची संस्कृति के पहरेदार हैं। लोक गीत साहित्य का अभिन्न अंग है। हरियाणा के लोक गीत बहुत से साधारण लोगों की बहुमूल्य निधि है, जो कि अधिकतर मौखिक रूप में उपलब्ध होती है। लोक गीतों के माध्यम से यहाँ के जनमानस के मन की गहराई को आन्दोलित करने वाली भाव धारा ही ध्वनि तरंगों का सहारा लेकर प्रस्फुटित है। हर्ष–विषाद के क्षणों में जब उसके हृदय के सरल उद्‌गार उमड़ने लगते हैं तो वह स्वर और शब्द का सहारा लेकर अपनी उन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता है। हरियाणा के लोक गीत हर प्रकार के भावों से परिपूर्ण होते हैं। लोक गीतों में इतनी विविधता पाई जाती है कि जिस अवसर के गीत गाये जा रहे हैं उन गीतों में उसी अवसर के अनुसार ही भावाभिव्यक्ति होती है, जैसे – युद्ध के समय वीरता से ओत–प्रोत गीत गाये जाते हैं। यहाँ का जनमानस फसलों की बिजाई और कटाई के समय भी गाता है, उमड़ती काली घटाओं को देखकर भी वह नाच गा उठता है और सुहानी ऋतुओं के आने पर वह मस्ती में नाचता–गाता है। यहाँ तक की वियोग के समय भी लोक गीत लोक मानस के हर्ष–विषाद व दुःख–सुख की झलक होती है। इनमें हास्य और वेदना दोनों प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति होती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक पूरे जीवन से इनका ओत–प्रोत रहता है। लोक गीत मन के बहुत निकट होते हैं इसलिए ये मनोभावों को कुशलता से अभिव्यक्त कर पाते हैं।''[3]

''हरियाणा के लोक गीत शहर के बनावटी जीवन की झूठी शान–शौकत से दूर भोले–भाले ग्रामीणों के सामाजिक संस्कारों को प्रतिबिम्बित करते हैं। इन गीतों

के माध्यम से ग्राम्य परम्पराएँ जनसाधारण के कोकिल कण्ठों से गुंजरित एवं मुखरित होती है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्वतः पहुँच जाती है।

ये गीत विशेषतः रचे नहीं जाते अपितु स्वतः बन जाते हैं। ये गीत गाने और समझने में सरल होते हैं। ये जनमानस के श्वासों से जुड़े हैं तथा इनके जीवन का अभिन्न अंग हैं। ये गीत जीवन के अधिक निकट हैं। इन गीतों के रचयिता कोई साहित्यिक व्यक्ति नहीं अपितु जनसाधारण मानस–पुत्र है। इसीलिए इन गीतों में शब्दों का जंजाल तथा वाक्यों की दुरूहता नहीं है। ये गीत हरियाणवी लोक संस्कृति का अमर कोष है। जिनको लिखने की कला यहाँ के मानस–पुत्रों को विरासत में मिली है। ये गीत जनसाधारण का मनोरंजन करते हैं।''[4]

''सृष्टि के आरम्भ से जब मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में विकास से अनभिज्ञ था। तब भी भावाभिव्यक्ति व मनोरंजन के विभिन्न साधन उसके पास थे और वह थे विभिन्न आंगिक संकेत एवं नादात्मक वाक्। जिसके सहारे मनुष्य उस समय भी अपना मनोरंजन करता था। इसी नादात्मक वाणी और आंगिक संकेतों ने लोक संगीत को जन्म दिया। साधारणतया लोग लोक संगीत का सम्बन्ध ऐसे संगीत से जोड़ते हैं जो ग्रामीण लोगों द्वारा बिना किसी शास्त्रीय नियमों में बँधते हुए, सन्तुलन व सुरीलेपन का निर्वाह करते हुए गाया बजाया जाता है। जबकि ऐसा नहीं है कि किसी भी बेसुरे ग्रामीण संगीत को हम लोक संगीत का नाम दे देते हैं। ग्रामीण संगीत या लोक संगीत भी शास्त्रीयता से अधिक परे नहीं है। बल्कि शास्त्रीय संगीत का जन्म ही लोक संगीत से माना गया है।''[5]

''लोक गीतों की रचना एवं उत्पत्ति के बारे में भी मतभेद है। कुछ लोग कहते हैं कि लोक गीत एक कवि की रचना नहीं बल्कि सामूहिक प्रयास है।

कुछ के अनुसार लोक गीत अपने आप बनते हैं। एक मत के अनुसार लोक गीतों का सृजन बीजरूपेण सर्वप्रथम एक व्यक्ति द्वारा होता है और मौखिक परम्परा में रहने के कारण अन्य व्यक्तियों द्वारा इनमें संशोधन होता रहता है यही कारण है कि एक ही गीत पाठ्यान्तर प्रायः उपलब्ध होते हैं।''[6]

''हरियाणा में लोक गीतों के प्रसार–विस्तार को देखकर कहा जा सकता है कि लोक जीवन का कोई कार्य कोई क्रिया व्यापार, कोई पक्ष, भाव एवं संस्कार ऐसा नहीं मिलेगा जो इनकी परिधि में न आता हो। इस प्रदेश के लोक गीतों का विचार बड़ा रंग–बिरंगा, असीम, व्यापक एवं विशाल है। इन गीतों में लोक जीवन के सभी प्रमुख भावों, संस्कारों, अनुष्ठानों, पर्वों, त्यौहारों, ऋतुओं, कार्यों, व्यवसायों एवं इन सभी की प्रतिक्रियास्वरूप हुए भौतिक एवं मानसिक बदलावों का विशद् चित्रण हुआ है।''[7]

''हरियाणवी लोक गीत समाज का दर्पण है। इनके माध्यम से वहाँ के लोगों का सामाजिक जीवन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इसमें समाज की परम्पराएँ, त्यौंहार व दिनचर्या का भी वर्णन मिलता है। प्रायः देखा जाता है कि त्यौहारों तथा भिन्न ऋतुओं में सामाजिक स्तर भेद को ये लोक गीत मिटाते हैं।

प्राचीन समय में कवि अपनी सारी शक्ति शासकों को सजग और कर्मठ बनाने में खर्च करते थे। जनसाधारण को सशक्त बनाने के लिए कवि अपनी वाणी को कष्ट नहीं देते थे। फलतः यदि राजा विरोधियों से जीतता था तो उनका मनोबल बना रहता था और वह हार जाए तो उनका मनोबल टूट जाता था। ऐसे संकट के लिए लोक गीतों का ही सहारा था।''[8]